Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 22/April/2026 **IJRAW:** 2026; 5(7):07-12 **Accepted:** 01/June/2026

भारत की स्वतंत्रता सेनानी: वीरांगना अवंती बाई रानी

*[1]**कीर्ति**

*[1]संस्कृत प्रशिक्षिका, संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

इस वीर-प्रसविनी भारत भूमि ने अनगिनत वीर-नारियों को जन्म दिया है, जिनकी वीरता और साहस ने समस्त विश्व को चकित और प्रभावित किया है। इन अद्वितीय वीराङ्गनाओं में रानी अवंतीबाई का नाम विशेष रूप से आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है, जिनकी शौर्य और बलिदान की गाथाएँ भारतीय इतिहास में अमर हो चुकी हैं। रानी अवंतीबाई की साहसिकता, उनकी निडरता और राष्ट्र के प्रति समर्पण ने उन्हें एक अनमोल रत्न बना दिया है। इन वीर नारियों की कीर्ति-कोमलिमा आकाश और पृथ्वी के सुदूर कोनों तक फैली हुई है, और उनकी यश-पताका समस्त दिशाओं में गर्व से लहराती हुयी हर दिल में समर्पण और श्रद्धा का संचार कर रही है। उनके अद्वितीय बलिदान और अकल्पनीय साहसिक कार्यों का अवलोकन करते हुए हर व्यक्ति अपने सिर को श्रद्धा और सम्मान से झुका देता है। इन महान नारियों के अद्वितीय शौर्य और बलिदान की गाथाएँ निरंतर प्रेरणा का स्रोत बनकर मानवता के इतिहास में अमिट निशान छोड़ रही हैं। उनका शौर्य, निर्भीकता और संघर्षपूर्ण कार्यकलापों से अवगत होना प्रत्येक मानव का सर्वोत्तम धर्म और कर्तव्य बनता है। क्योंकि जिस राष्ट्र का ध्यान अपनी नारियों की अपूर्व वीरता, उनकी असाधारण शक्ति और नैतिकता की ओर नहीं होता, वह राष्ट्र शीघ्र ही पतन के गर्त में समाहित हो जाता है। ऐसी स्थिति में उस राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति, सम्मान और गौरव का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, और वह इतिहास के काले पृष्ठों में खो जाता है।

इस शोध पत्र के माध्यम से मैं स्वतंत्रता संग्राम में एक महिला, रानी और पत्नी के रूप में उनके योगदान को उजागर करना चाहती हूँ, जहाँ सत्ता में रहते हुए एक महिला को अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह करते देखना दुर्लभ था। नृवंशविज्ञान डेटा पद्धति की मदद से मैं अवंतीबाई के पीछे विभिन्न घटनाओं और इतिहास पर प्रकाश डालने जा रही हूँ। इस शोध पत्र के पीछे का उद्देश्य इस बात पर प्रकाश डालना है कि कैसे उन्होंने गुरिल्ला युद्ध की रणनीति का इस्तेमाल किया और अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया और इतिहास के शोध पत्रों पर एक बड़ा प्रभाव डाला। मैं उनकी बहादुरी से हासिल की गई सभी महान उपलब्धियों को प्रस्तुत करने जा रहा हूँ जो समकालीन युवाओं और महिलाओं को प्रभावित कर सकती हैं। रानी अवंतीबाई ने सिर्फ एक महिला और एक रानी होने की बाधाओं को तोड़ा, जिन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने की अनुमति नहीं थी। इस शोध पत्र का उन्मुखीकरण मध्य प्रदेश के रामगढ़ में हुई घटना और डिंडोरी की महारानी के जीवन से घिरा हुआ है।

मुख्य शब्द: अवंतीबाई, डिंडोरी, स्वतंत्रता, ब्रिटिश, बलिदान।

1. प्रस्तावना

भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक लंबी और कठिन यात्रा थी, जिसमें अनगिनत वीरों और वीरांगनाओं ने अपनी जान की आहुति दी। देश के इतिहास में अनेक नाम ऐसे हैं जिन्हें सम्मान और श्रद्धा के साथ याद किया जाता है, लेकिन कुछ महान सेनानी ऐसे भी हैं जिनका योगदान इतिहास में कहीं खो गया है। वीरांगना अवंती बाई रानी का नाम भी उन्हीं सेनानियों में शामिल है, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन समय के साथ उनका योगदान विस्मृत हो गया। इस शोध पत्र में हम अवंती बाई रानी के जीवन उनके संघर्ष और उनके योगदान पर चर्चा करेंगे, ताकि उनकी वीरता को पुनः स्मरण किया जा सके।

मातृभूमि हित प्राण दिए, बढ़ा देश का मान।
'कीर्ति' लिखे इतिहास में, अमर रहे बलिदान॥

मंडला जिले के वीर सेनानियों में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई का नाम हमेशा अत्यधिक सम्मान और गर्व के साथ लिया जाता है। रानी अवंतीबाई ने अपनी मातृभूमि के प्रति जो अथाह प्रेम और अपार शौर्य का प्रदर्शन किया, वह उन्हें भारतीय इतिहास की महानतम वीरांगनाओं में शामिल करता है। रामगढ़, जो मंडला जिले के पहाड़ी इलाकों में स्थित एक छोटा सा नगर है, का ऐतिहासिक और रणनीतिक महत्व समय-समय पर बढ़ा है। यह क्षेत्र हमेशा से स्वतंत्रता की भावना और वीरता के प्रतीक के रूप में जाना जाता रहा है।

रानी अवंती बाई लोधी, डिंडोरी की रानी, 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की एक वीरता और प्रेरणा का प्रतीक थीं। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ

***Corresponding Author:** कीर्ति

संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने लोगों व सिंहासन के प्रति वफादारी दिखाई। रानी अवंती बाई का साहस और नेतृत्व आज भी भारतीय युवाओं के लिए आदर्श है। उन्हें एक योद्धा रानी के रूप में सम्मानित किया जाता है और उनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अमूल्य है।

वीरांगना अवंती रानी बाई लोधी

प्रारंभिक जीवन

अवंतीबाई लोधी का जन्म 16 अगस्त 1831 को मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के मनकेहड़ी गाँव में एक लोधी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम जुझार सिंह था, वे भी मध्य क्षेत्र के प्रतापी राजाओं में से एक थे। अवंती का विवाह राजकुमार विक्रमाजीत राजपूत सिंह लोधी से हुआ था, जो रामगढ़ (डिंडोरी) के राजा लक्ष्मण सिंह के पुत्र थे।

सन् 1850 में रामगढ़ के राजा लक्ष्मण सिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र विक्रमाजीत सिंह को राज्य का उत्तराधिकारी बनाया गया। लेकिन विक्रमाजीत मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाने के कारण शासन के योग्य नहीं थे। उनके असमर्थ होने के कारण अंग्रेजों ने इस क्षेत्र पर अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश की और राज्य के प्रशासन का प्रभार अपने हाथ में ले लिया। उन्होंने एक अंग्रेज अधिकारी को नियुक्त किया और रामगढ़ के राजपरिवार के भरण-पोषण के लिए वार्षिक वृत्ति तय कर दी। इस कदम से अंग्रेजों का उद्देश्य रामगढ़ पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना था, लेकिन रानी अवंतीबाई ने इस अन्याय के खिलाफ अपना विरोध जताया और अंग्रेजों को उनके कब्जे से बाहर खदेड़ने का संकल्प लिया। [1]

लक्ष्मण सिंह की मृत्यु के बाद एक बहादुर रानी ने राजगद्दी संभाली और राज्य पर शासन किया, जिसे अंग्रेजों की नज़र में अस्वीकार कर दिया गया। साथ ही अंग्रेजों ने अवंतीबाई के बेटों (अमन सिंह और शेर सिंह) को नाबालिग होने के कारण राजगद्दी का वैध उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर दिया। रानी के रूप में उन्होंने राज्य के मामलों को गंभीरता से संचालित किया। नाबालिग बेटों की माँ और देखभाल करने वाली के रूप में, राज्य की सत्ता रानी के पास आ गई। रानी ने राज्य के किसानों को अंग्रेजों के किसी भी निर्देश और कर्तव्यों का पालन न करने का आदेश दिया। इस सुधार कार्य से रानी की लोकप्रियता बढ़ी और वह आम लोगों की रानी बन गईं।

रानी अवंतीबाई, जो एक अत्यंत साहसी, कुशल और योग्य महिला थीं, उन्होंने न केवल अपनी प्रजा के अधिकारों की रक्षा की, बल्कि उन्होंने राज्य की व्यवस्था और शासन को भी अपने हाथ में लिया। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा नियुक्त अधिकारी को रामगढ़ से बाहर खदेड़ भगाया और राज्य का शासन अपने हाथों में ले लिया। रानी ने अपने समर्थकों और आसपास के जमींदारों से समर्थन जुटाया और अंग्रेजों के खिलाफ एक संगठित मोर्चा तैयार किया। रानी की यह पहल केवल उनकी प्रशासनिक क्षमता का प्रमाण नहीं थी, बल्कि यह उनकी स्वतंत्रता के प्रति अडिग निष्ठा का भी प्रतीक थी।

रानी ने अपने सैनिकों के साथ मिलकर युद्ध का संचालन किया और खुद भी सैनिक वस्त्र पहनकर, हाथ में तलवार लेकर रणभूमि में शामिल हो गईं। रानी का नेतृत्व अत्यंत प्रेरणादायक था, क्योंकि वह न केवल अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ातीं, बल्कि खुद भी उनके साथ युद्ध करतीं। उन्होंने न केवल एक सक्षम शासक के रूप में, बल्कि एक वीर सेनानी के रूप में भी अपनी अद्वितीय पहचान का निर्माण किया।

माटी की लाज बचा गई, रण में बनी मशाल।
अवंती रानी नाम से, अमर हुआ स्वाभिमान॥

कीर्तिः

व्यपगत का सिद्धांत

यह लॉर्ड डलहौजी द्वारा 1848 में पेश किया गया था, यह एक मनमाना विलय नीति थी जिसने ईस्ट इंडिया कंपनी या गवर्नर को किसी भी भारतीय राज्य को छीनने की अनुमति दी, जिसके राजा की मृत्यु बिना किसी प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी के हो गई हो। अपनी भूमि हड़पने की मंशा को ध्यान में रखते हुए, 1851 में, अंग्रेजों ने रामगढ़ को 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' घोषित कर दिया और अवंती बाई के स्थान पर राज्य के लिए अपना प्रशासक नियुक्त कर दिया। अवंती क्रोधित हो गई। इस अन्यायपूर्ण और अपमानजनक निर्णय से क्रोधित रानी ने प्रशासक को बाहर निकाल दिया और अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। अवंती बाई का अगला कदम पड़ोसी राज्यों के शासकों को ब्रिटिश अधीनता के खिलाफ युद्ध में उनके साथ हाथ मिलाने के लिए तत्काल संदेश भेजना था। अपने कड़े शब्दों वाले पत्रों में रानी ने लिखा :-

अवंती बाई का अगला कदम पड़ोसी राज्यों के शासकों को ब्रिटिश अधीनता के खिलाफ युद्ध में उनके साथ हाथ मिलाने के लिए जरूरी

संदेश भेजना था। अपने कड़े शब्दों वाले पत्रों में वीर रानी ने लिखा: "यदि आपको लगता है कि हमारी गुलाम मातृभूमि के प्रति आपका कोई कर्तव्य है, तो अपनी तलवारें उठाएँ और अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध में कूद पड़ें। अन्यथा ये चूड़ियाँ पहनें और अपने आप को घरों में छिपा लें" [2] इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि अवंती बाई की अपील ने भारत के मध्य भाग में क्रांति की लहर को जागृत किया। उनके साहसी और प्रेरणादायक शब्दों ने पड़ोसी राजाओं को प्रेरित किया और उन्होंने रानी का समर्थन किया। 1857 तक पूरा क्षेत्र सशस्त्र विद्रोह में शामिल हो गया था। रानी अवंती बाई ने आगे बढ़कर नेतृत्व संभाला और निडर होकर 4,000 सैनिकों की एक सेना बनाई। खुद रानी ने इस सेना का नेतृत्व किया और ब्रिटिश सैनिकों के खिलाफ व्यक्तिगत रूप से युद्ध में भाग लिया। उनकी वीरता और नेतृत्व ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी।

1857 का विद्रोह

मई 1857 में जब यह अफवाहें फैलने लगीं कि राइफलों की ग्रीस गाय और सूअर की चर्बी से बनी है, तो भारतीय समाज में गहरी नाराजगी फैल गई। इस खबर ने हर स्तर पर असंतोष और विरोध को जन्म दिया। गाँव-गाँव में विद्रोह की तैयारी शुरू हो गई। इस उग्र माहौल में, डिंडोरी की रानी ने लोगों से हथियार उठाने और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष करने का आह्वान किया। उन्होंने अपने संदेश को हस्तलिखित नोटों के माध्यम से फैलाने का निर्णय लिया, ताकि अधिक से अधिक लोग एकजुट हो सकें और ब्रिटिशों के खिलाफ संघर्ष में भाग ले सकें। रानी का यह कदम विद्रोह को तेज़ करने और समाज में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण साबित हुआ।

अंग्रेज़ों को उन पर आसान जीत की उम्मीद थी। इसलिए अंग्रेजों की सेना ने अपनी पूरी ताकत इकट्ठी की और रामगढ़ पर एक बड़ा हमला किया, जिससे शहर में आग लग गई। इस तरह, रानी को अपने परिवार के साथ देवहारीगढ़ की जंगली पहाड़ियों में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। हालाँकि रानी अवंती बाई बिना लड़े हार मानने वालों में से नहीं थीं। गुरिल्ला युद्ध की रणनीति का उपयोग करते हुए, उन्होंने अंग्रेजों के शिविर पर हमला किया और फिर शिविर को अराजकता में डुबो दिया। लेकिन दुर्भाग्य से, उनकी अविश्वसनीय लड़ाई की भावना ब्रिटिश सैन्य मशीन की क्रूर ताकत के सामने कुछ भी नहीं थी।

मुख्य घटना

रानी अवंतीबाई अपनी सेना के साथ मंडला के पास खेरी नामक गाँव में पहुँचीं। अंग्रेजों को उम्मीद थी कि वे आसानी से जीत जाएंगे, लेकिन वे अवंती की सेना से हार गए। उनके पास पीछे हटने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, जबकि रानी ने दिसंबर 1857 से फरवरी 1858 तक मंडला पर नियंत्रण रखा।

अंग्रेजों ने इस अपमान को सहन नहीं किया। अंग्रेज उनके शासन को मिटाने के लिए इतने दृढ़ थे कि उन्होंने क्रूर बल के साथ जवाबी कार्रवाई की और रामगढ़ पर हमला कर दिया - और उनके लोगों के लिए कोई भी भावुक देशभक्ति और प्यार उन्हें सैन्य शक्ति के साथ उनकी सेना को कुचलने से नहीं रोक सका। उन्होंने क्षेत्र में आग लगा दी और रानी अवंतीबाई के पास देवहरिगढ़ के पहाड़ी जंगलों में सुरक्षा की तलाश करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

फिर भी, रानी ने हार नहीं मानी। गुरिल्ला युद्ध तकनीक का उपयोग करके, उन्होंने जनरल वाडिंगटन के शिविर में घुसपैठ की और उसकी सेना को भंग कर दिया। दुर्भाग्य से, केवल युद्ध शक्ति के सामने लड़ने की भावना पर्याप्त नहीं थी। अंततः, वह खुद को ब्रिटिश सेना द्वारा फँसा हुआ पाती है, जिन्होंने रामगढ़ को घेर लिया था। यह जानते हुए कि उसकी हार निश्चित थी, उसने दुश्मन के हाथों मारे जाने की अपेक्षा अपने जीवन का बलिदान देना बेहतर समझा।

बलिदान रानी

20 मार्च 1858 को अपनी ही तलवार से सीने पर वार कर अपने प्राणों की आहुति दे दी। इस समय उनका चेहरा प्रसन्न था क्योंकि उन्होंने मातृभूमि के लिए अपना सर्वोत्तम बलिदान दिया था। रानी ने यह साबित किया कि एक सच्ची वीरांगना के लिए अपनी जान से बढ़कर अपनी मातृभूमि की रक्षा और स्वतंत्रता होती है। जब रानी अवंतीबाई के इस कृत्य उनकी सहयोगी प्रेमलता ने देखा तो वे भी अपनी ही तलवार को सीने में घोंप अपने प्राणों की आहुती मातृभूमि के नाम कर दीं। कहा जाता है कि वीरांगना रानी अवंतीबाई उनके अंतिम शब्द ये थे:- "हमारी दुगावती ने जीवित रहते हुए अपने शत्रु को अपने शरीर को छूने न देने की प्रतिज्ञा की थी, इसे मत भूलना," [3]

रानी अवंतीबाई और उनकी सहयोगी प्रेमलता का बलिदान यह दर्शाता है कि एक सच्चे देशभक्त के लिए व्यक्तिगत जीवन की कोई कीमत नहीं होती, जब बात अपने देश की सुरक्षा और स्वतंत्रता की हो। उनके इन शब्दों और कर्मों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अमिट छाप छोड़ी।

रानी अवंतीबाई का बलिदान न केवल रामगढ़, बल्कि पूरे भारत में स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा बना। उनका शौर्य, साहस और बलिदान आज भी हमें यह सिखाता है कि स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए हमें किसी भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। रानी अवंतीबाई के जीवन का यह हिस्सा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमर रहेगा। उनका नाम हमेशा एक वीरता की मिसाल के रूप में लिया जाएगा, और वह हमेशा हमारे दिलों में एक वीरांगना के रूप में जीवित रहेंगी। [5]

अवंती का बलिदान यह, युग-युग रहे महान।
कहे "कीर्ति" निज लेखनी, नित करती सम्मान॥

उहें यह बेहतर लगा कि वह दुश्मन के हाथों में पकड़ी जाने की बजाय अपनी जान दे दे, जिसे वह घृणा करती थीं। उन्होंने अपनी जान को बलिदान करना चुना, क्योंकि वह स्वतंत्रता संग्राम के लिए अपनी आस्था में दृढ़ थीं। वे उन वीरांगनाओं में शामिल हैं, जिनकी सराहना 1857 की घटनाओं में शामिल लोगों द्वारा की जाती है। ये महिलाएँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति अपनी निष्ठा और साहस के लिए प्रसिद्ध हैं।

इन वीरांगनाओं के प्रमुख उदाहरण हैं:-

- **रानी लक्ष्मीबाई:** झांसी की रानी, जिन्होंने ब्रिटिशों के खिलाफ वीरता से संघर्ष किया और अपनी मातृभूमि की रक्षा की।
- **आशा देवी:** 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली एक वीरता से लड़ी हुई महिला।
- **झलकारी बाई:** रानी लक्ष्मीबाई की सेना में एक साहसी सैनिक, जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर रानी की रक्षा की।
- **महाबिर देवी:** एक स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने ब्रिटिशों के खिलाफ वीरता से संघर्ष किया।
- **ऊदा देवी:** वह महिला जिन्होंने ब्रिटिशों के खिलाफ अपनी सेना का नेतृत्व किया, विशेष रूप से लखनऊ की घेराबंदी के दौरान अपनी वीरता से इतिहास रचा।

ये महिलाएँ, और भी कई वीरांगनाएँ, 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थीं, और उनके बलिदान और साहस ने भारतीयों को हमेशा प्रेरित किया है।

रानी अवंतीबाई का योगदान

रानी अवंतीबाई ने केवल शासक के रूप में शासन नहीं किया, बल्कि एक सेनानी की तरह अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया। उनका साहस, उनकी निडरता और उनकी वीरता स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणास्त्रोत बन गई। हालांकि उनकी वीरता को समय के साथ भुला दिया गया, लेकिन उनके योगदान को कभी भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। रानी अवंतीबाई ने यह सिद्ध कर दिया कि एक महिला अपनी देशभक्ति और साहस के बल पर किसी भी पुरुष से कम नहीं होती।

उनकी वीरता ने यह स्पष्ट किया कि एक देश की स्वतंत्रता के लिए केवल पुरुषों का योगदान ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि महिलाएँ भी अपने साहस, संघर्ष और बलिदान से उसी स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बन सकती हैं।

अवधि में भुला दिया गया योगदान

रानी अवंतीबाई का नाम भारतीय इतिहास में दुर्लभ रूप से आता है। उनके संघर्ष और बलिदान को मुख्यधारा के इतिहास से बाहर कर दिया गया है, जिसके कारण अधिकतर लोग उनके बारे में नहीं जानते। हालाँकि उनके योगदान की महत्ता को समझने की आवश्यकता है। उनके बलिदान और संघर्ष के बिना भारत का स्वतंत्रता संग्राम अधूरा रहेगा। हमें यह याद रखना चाहिए कि रानी अवंतीबाई जैसे वीर नायक और वीरांगनाओं के योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

रानी अवंतीबाई की अनकही कहानी ने इतिहास के पन्नों में अपनी छाप छोड़ी है। डिंडोरी की रानी जिन्हें रानी अवंती बाई लोधी के नाम से भी जाना जाता है, औपनिवेशिक काल में मध्य प्रदेश में जबलपुर के पास रामगढ़ साम्राज्य की महारानी थीं। वह 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के खिलाफ अपने विद्रोह के लिए प्रसिद्ध हैं।

वह उपहार जो उन्होंने अपने पीछे छोड़ा

भारत की स्वतंत्रता के बाद, अवंतीबाई को केवड़ंतिया और लोकगीतों के माध्यम से याद किया जाता है। ऐसा ही एक लोकगीत गोंड लोगों का है, जो इस क्षेत्र की एक वनवासी जनजाति है, जिसमें कहा गया है, "रानी जो हमारी माँ हैं, अंग्रेजों पर बार-बार प्रहार करती हैं। वे जंगलों की सरदार हैं। उन्होंने दूसरे शासकों, सरदारों को पत्र और चूड़ियाँ भेजीं और उन्हें अपने पक्ष में खड़ा किया। उन्होंने अंग्रेजों को परास्त किया और उन्हें खदेड़ दिया, हर गली में उन्होंने उन्हें भयभीत कर दिया, ताकि वे जहाँ भी रास्ता पा सकें, भाग जाएँ। जब भी वे घोड़े पर सवार होकर युद्ध के मैदान में उतरीं, उन्होंने बहादुरी से लड़ाई लड़ी और तलवारों और भालों का बोलबाला रहा। ओह, वे हमारी रानी माँ थीं" रानी अवंतीबाई की कहानी मुख्यधारा की कहानियों में शामिल नहीं हुई, यह स्थानीय लोकगीतों, रंगमंच प्रदर्शनों और आधिकारिक दस्तावेजों और लेखों में दर्ज होकर जीवित रही, जिसमें उस समय की घटनाओं को दर्ज किया गया।

रानी अवंती जिस महत्व की थीं पात्र

एक ऐसी महिला, जिसने बिना अपना सम्मान खोए अपने प्राणों की आहुति दे दी, उसे भारतीय इतिहास ने भुला दिया है। वह केवल मौखिक साहित्य और केवदंतियों के रूप में जीवित है। वह उसी तरह से प्रशंसा की हकदार है, जैसे हम रानी लक्ष्मीबाई और 1857 के विद्रोह के अन्य स्वतंत्रता सेनानियों को देते हैं। अन्यथा हम एक रत्न और उनकी कहानी खो देंगे, जो समाज के विभिन्न वर्गों को प्रभावित और प्रेरित कर सकती है।

2. साहित्य की समीक्षा

श्रुति जैन, 2023, [5] ने अपने शोध पत्र डिंडोरी की एक महारानी: रानी अवंतीबाई, में रानी अवंतीबाई की अनकही कहानी ने इतिहास के पन्नों में अपनी छाप छोड़ी है।

डिंडोरी की रानी जिन्हें रानी अवंती बाई लोधी के नाम से भी जाना जाता है, औपनिवेशिक काल में मध्य प्रदेश में जबलपुर के पास रामगढ़ राज्य की महारानी थीं। वह 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के खिलाफ अपने विद्रोह के लिए प्रसिद्ध हैं।

नारायण, बद्री (2006) [6] ने "उत्तर भारत में महिला नायक और दलितों का दावा : संस्कृति, पहचान और राजनीति"। में लिखा है कि "1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान, रानी अवंती बाई को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की एक कट्टर विरोधी के रूप में जाना जाता है। रानी अवंती बाई ने न केवल अपने राज्य की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, बल्कि उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1857 में जब भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह की लहर उठी, तो रानी अवंती बाई ने अपनी सेनाओं का नेतृत्व किया और ब्रिटिश शासन के खिलाफ युद्ध किया।"

वृन्दावन लाल वर्मा, 1989, [7] का उपन्यास "रामगढ़ की रानी" ब्रिटिशकालीन भारत में सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष को दर्शाता है। उपन्यास की शुरुआत जबलपुर की कचहरी से होती है, जहां भारतीयों पर बढ़ते करों और ब्रिटिश व्यापारियों के प्रभाव को दिखाया गया है। रानी अवंती बाई, जो रामगढ़ राज्य की शासिका हैं, अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष की योजना बनाती हैं। वह उमराव सिंह को प्रतिनिधि नियुक्त करती हैं और सामंतों से मिलकर ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की योजना बनाती हैं। उपन्यास में रानी का साहस और नेतृत्व स्पष्ट रूप से उभरता है, जो भारतीय समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

मुख्यमंत्री डॉ. [8] मोहन यादव ने महान वीरांगना एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रानी अवंतीबाई लोधी की जयंती के अवसर पर उन्हें याद कर श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया के माध्यम से कहा कि "भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी जी की जयंती पर सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। आपके शौर्य और बलिदान की अमर गाथा युगों-युगों तक प्रत्येक भारतीय, विशेषकर बालिकाओं को स्वतंत्रता, स्वाभिमान और धर्म की रक्षा के लिए प्रेरित करती रहेगी।" उल्लेखनीय है कि रानी अवंतीबाई लोधी 1857 के भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली प्रथम महिला शहीद थीं।

गनी, जेड.आर., और सिसोदिया, एस.डी. (2020)। [9] भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम नायिकाएँ। में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था, और उनका इतिहास बिना उनके बलिदान अधूरा होगा। रानी अवंती बाई, जो रामगढ़ की रानी के नाम से प्रसिद्ध हैं, ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ अपने राज्य की स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए साहस और वीरता से लड़ाई लड़ी। उन्होंने 1857 के विद्रोह में अहम भूमिका निभाई और अपने सैनिकों का नेतृत्व किया।

रानी अवंती बाई के नेतृत्व में भारतीय महिलाएं भी स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल हुईं और देश की सेवा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. उद्देश्य

- रानी अवंती बाई ने अपने राज्य और देश को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त करने के लिए संघर्ष किया।
- रानी ने रामगढ़ राज्य की स्वतंत्रता और सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए युद्ध लड़ा।
- रानी ने किसानों और आम जनता के अधिकारों की रक्षा करने के लिए काम किया।
- रानी ने महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और उन्हें सशक्त बनाने की कोशिश की।
- रानी ने समाज में समानता और न्याय सुनिश्चित करने के लिए नीतियां बनाई।
- रानी ने भारतीय संस्कृति और परंपराओं को बचाने के लिए प्रयास किए।
- रानी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जन जागरूकता फैलाकर स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरित किया।

4. शोध प्रविधि

इस शोध पत्र में 'नृवंशविज्ञान डेटा पद्धति' (Ethnographic Data Methodology) का उल्लेख किया गया है।

यह पद्धति उन समाजों, संस्कृतियों और समुदायों का अध्ययन करती है जिनके बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रमुख रूप से "गौर से अवलोकन, साक्षात्कार, और प्रत्यक्ष अनुभव" किया जाता है। नृवंशविज्ञान के तहत, शोधकर्ता समुदायों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को समझने के लिए विस्तृत फील्डवर्क करते हैं।

इस शोध पत्र में, "रानी अवंतीबाई के संघर्ष, उनकी बहादुरी, और उनके योगदान को समझने" के लिए नृवंशविज्ञान पद्धति का उपयोग किया गया है, जिससे यह जाना जा सके कि कैसे एक महिला ने पितृसत्तात्मक समाज में अपनी स्थिति को चुनौती दी और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया।

5. निष्कर्ष

वीरांगना रानी अवंतीबाई ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक सशक्त और प्रेरणादायक भूमिका निभाई। उनका जीवन भारतीय राष्ट्रवाद, साहस और मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा का प्रतीक बन गया। जब ब्रिटिश साम्राज्य ने भारतीय रियासतों पर अपना नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया, तो रानी अवंतीबाई ने अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए अपने राज्य की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अद्वितीय संघर्ष किया। उनका बलिदान केवल एक युद्ध की कथा नहीं, बल्कि स्वतंत्रता के लिए सच्चे समर्पण और त्याग की गाथा है।

20 मार्च 1858 को रानी अवंतीबाई ने अपनी ही तलवार से सीने में वार कर अपने प्राणों की आहुति दी, और इस समय उनका चेहरा प्रसन्न था, क्योंकि उन्होंने मातृभूमि के लिए सर्वोत्तम बलिदान दिया था। उनका यह बलिदान यह साबित करता है कि एक सच्ची वीरांगना के लिए अपनी जान से बढ़कर अपनी मातृभूमि की रक्षा और स्वतंत्रता होती है। रानी अवंतीबाई के साथ उनकी सहयोगी प्रेमलता ने भी इसी संघर्ष में अपनी जान दी, और दोनों का बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अमिट धरोहर बन गया।

रानी अवंतीबाई का योगदान न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण था, बल्कि उन्होंने यह भी सिद्ध कर दिया कि एक सच्चे नेता का कर्तव्य अपने देशवासियों को प्रेरित करना, उनके लिए सर्वोत्तम रास्ता दिखाना और किसी भी कठिनाई के बावजूद स्वतंत्रता की राह पर अडिग रहना है। रानी अवंतीबाई और उनकी सहयोगियों ने जो बलिदान दिया, वह आज भी हमें यह सिखाता है कि मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए हमें अपने जीवन की भी परवाह नहीं करनी चाहिए।

उनका साहस, वीरता, और अपने देश के प्रति समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। रानी अवंतीबाई का बलिदान और उनका संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में हमेशा अमर रहेगा।

सन्दर्भ सूची

1. BYJU'S. MP Board Class 10 Social Science, Chapter 10 (Hindi). Available from: https://cdn1.byjus.com/wp-content/uploads/2020/11/MP-Board-Class-10-Social-Science-Chapter-10-in-Hindi.pdf (Accessed as

cited).
2. नरवरिया एएस, रत्नम के. वीरांगना महारानी अवंतीबाई लोधी: एक विराट व्यक्तित्व. भारत राधा प्रकाशन; 2015.
3. Jain S, Mishra M. An Empress of Dindori: Rani Avantibai.
4. BYJU'S. MP Board Class 10 Social Science, Chapter 10 (Hindi). Available from: https://cdn1.byjus.com/wp-content/uploads/2020/11/MP-Board-Class-10-Social-Science-Chapter-10-in-Hindi.pdf (Accessed as cited).
5. Jain S. A Maharani of Dindori: Rani Avantibai. Peer-Reviewed International Refereed Online Journal of History. 2023.
6. Narayan B. Women Heroes and Dalit Assertion in North India: Culture, Identity, and Politics. New Delhi: SAGE Publications; 2006.
7. वर्मा वीएल. रामगढ़ की रानी. झाँसी: मयूर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड; 1989.
8. Tarun Mitra. Chief Minister Dr. Yadav Remembered Freedom Fighter Rani Avantibai Lodhi. Available from: https://www.tarunmitra.in/state/madhya-pradesh/chief-minister-dr-yadav-remembered-freedom-fighter-rani-avantibai-lodhi/article-50518 (Accessed as cited).
9. Ganie ZR, Sisodia SD. The Unsung Heroines of India's Freedom Struggle. Am Int J Soc Sci Res. 2020;5(2):19–25.